ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

इक्कीसवीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में व्यक्त नैतिक पतन

बनजा तालदी
प्राध्यापक,
श्री सत्यसाई महिला महाविद्यालय
पोखरीपूट, भूवनेश्वर, ओड़िशा – 751020

शोध सारांश – वर्तमान समाज में 'नैतिकता' का महत्व बहुत जरूरी है। जो एक बच्चा अपने माता-पिता, परिवेश एवं शिक्षा के माध्यम से सीखता है। आज समाज में नैतिकता के कमी के कारण अनेक प्रकार के दुर्नीति होते हुए नज़र आरहे हैं। आये दिन अख़्बार के सुर्खियों में इन सब दुर्नीतियों के चर्चे होते रहते हैं। अर्थात् समाज आगे बढ़ते हुए आधुनिकता को इतना अपना रहा है कि पूराने नीति, बड़ों का संस्कार सब कुछ भूल कर पैसों के पीछे भाग रहा है। आज मनुष्य के लिए सबसे अहम एवं महत्वपूर्ण केवल कागज़ के नोट हो गये हैं। इंसान पैसों के पीछे भागते हुए बाकी रिश्ते नाते सब कुछ पीछे छोड़ गया है। साहित्य एक ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से समाज में चल रही परिस्थिति को हम जान व समझ सकते हैं। जैसे बिना दर्पण देखे बाहर नहीं निकलना चाहिए, वैसे ही साहित्य हमारे समाज का दर्पण है। महिला कथाकारों ने लोप पा रहे नैतिक मूल्यों की ओर नज़र डालते हुए, उस पर अपनी कलम चलाई है।

'नैतिक' अर्थात् आचरण, नीति। 'नीति' का शाब्दिक अर्थ है सदाचार या श्रेष्ठ व्यवहार अर्थात् "समाज, धर्म और राज्य द्वारा नियमों के अनुकूल चलना ही नीति है और इन नियमों के अनुकूल आचरण से सम्बंधित मूल्य ही नैतिक मूल्य हैं।"[1] नैतिक मूल्यों के अंतर्गत दया, त्याग, पवित्रता, सत्य आदि शाश्वत मूल्यों का समावेश है। यह मूल्य समाज तथा देश के अनुसार या परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। आज के आधुनिक युग में निरंतर परिवर्तन के कारण नैतिकता की नूतन दिशाएँ विकसित हो रही हैं और परम्परागत नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। पानेरी हेमेंद्र कुमार के अनुसार, "नीति भावुकता की अपेक्षा बुद्धि पर आश्रित होती है, इसमें सत्य की प्रतिष्ठा का आग्रह होता है, यही कारण है कि मानव धर्म परम्परागत धर्म की अपेक्षा व्यक्ति के अधिक निकट है।"[2]

समाज में नैतिक मूल्य के विघटन के कारण ही एक बेटा अपने माँ-बाप या छोटे से बड़े करने वाले अपने माता पिता रुपी वृद्धा को घर में रखने के लिए कतराते हैं। मालती जोशी के 'अनिकेत' कहानी में "तुमने अपने बचपन में मुझे एक सपना दिखाया था कि तुम पढ़-लिख कर बड़े आदमी बनोगे, तुम्हारा एक बड़ा-सा बँगला होगा, बँगले में मेरा भी एक कमरा होगा-कमरे से लगी बालकनी में एक झूला पड़ा होगा। उस झूले पर बैठकर मैं तुम्हारेबच्चों को कहानियाँ सुनाऊँगी, उनके लिए स्वेटर बुनूँगी... "अब तुम बड़े आदमी बन गए हो। तुम्हारे पास बँगला भी है, घर में बाल-गोपाल भी हैं, पर एक बार भी नहीं पूछा कि क्या जिया, मेरे घर रह सकोगी?.."[3] समाज और परिवार एक

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

दूसरे के पूरक होते हैं। इन दोनों का अन्योन्याश्रित संबंध है। परिवार समाज का महत्वपूर्ण भाग है और परिवार का हर सदस्य समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है।

"सामाजिक मूल्य, सामाजिक और व्यक्तिगत विघटन के कारण भी बन सकता है। मूल्यों के आधार पर व्यक्ति अपनी मनोवृत्तियाँ बनाता है जब व्यक्ति की मनोवृत्तियाँ और सामाजिक मूल्यों में संघर्ष होता है तो सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है।"[4] हर समाज में मूल्यों के कुछ प्रतिमान निश्चित किये जाते हैं और इन्हीं प्रतिमानों के आधार पर सामाजिक व्यवहार होते हैं। जैसे हमारे भारतीय समाज में एक विवाह, विवाह सम्बंधों की पवित्रता हमारे लिए एक महत्वपूर्ण सामाजिक मूल्य है, परंतु इन मूल्यों में होने वाले परिवर्तन ही सामाजिक विघटन को विकसित कर रहे हैं।

"समाज में आधुनिक नवीन दृष्टि, भौतिकवाद का आग्रह, स्त्री-पुरुष समानता, नारी-शिक्षा, यौन-स्वातंत्र्य की लालसा के कारण समाज में मूल्य परिवर्तन की स्थिति उन्मुक यौन सम्बंधों में पाई जाती है। विवाह पूर्व और विवाहोत्तर दोनों स्थितियों में पवित्रता, एकनिष्ठता, शारीरिक एवं मानसिक शुद्धता की नैतिकता ह्रास हो गया है।"[5] मनुष्य समाज प्रिय होने के कारण समाज में जो हो रहा है, उसका सीधा परिणाम उस पर होता है। और इस तरह से सामाजिक मूल्य विघटन होता है।

नारी शिक्षित होने लगी तथा साथ में अपने अस्तित्व के प्रति जागृत होने लगी और इस कारण सामाजिक रुढ़ियाँ, नैतिक मान्यताएँ और परम्परागत मूल्यों में उसका विश्वास न रहा और नारी जीवन में मूल्य-विघटन बढ़ता गया। जैसे-जैसे समाज बदलता गया वैसे नारी सोच में बदलाव आने लगा और भारतीय नारी जीवन में मूल्यों की टूटन अधिक बढ़ती गई जिससे नारी जीवन की असंगतियों को जन्म दिया और इसका सर्वाधिक परिणाम महिला लेखन पर दिखाई देने लगा। "नये और पुराने मूल्यों की टकराहट, अविवेकपूर्ण निर्णयों से आने वाले कटु परिवर्तनों का दर्द लेखिका ने सहज रुप से उभारा है। आज के नारी जीवन में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जो परिवर्तन आये हैं और जिन नये मूल्यों को आत्मसात करने और पुराने मूल्यों को अस्वीकार करने के लिए आज की नारी बिना सोचे समझे अपनाने के लिए आकुल हो रही है।"[6]

समाज ने स्त्रियों के साथ आज तक जैसे चाहे वैसा व्यवहार किया है। जो चाहे वो नियम लगा कर उसे अपने नियमों से जकड़ रखा है। "स्त्रियों की अनेक समस्याओं का सुलझ पाना तो दूर की बात है, साधारण जीवन में उनके साथ कैसे शिष्टाचार उचित होगा, इसका निर्णय भी अब तक नहीं हो सका।"[7] केवल समाज ही नहीं बल्कि अपने खुद के परिवार के लोगों के साथ साथ परिवार के स्त्री भी स्त्री को परेशान कर रहे हैं। "नारी-उत्पीड़न के प्रश्न को बारीकी से देखने पर यह अनुभव होता है कि पति के साथ ही साथ घर की महिलाएँ भी नारी को प्रताड़ित करने में बराबर की हिस्सेदार हैं।"[8]

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

रेणुका नैयर स्त्री की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं – "संवैधानिक रुप से पुरुष के समान घोषित कर दिया गया है लेकिन समानता का अधिकार मिलने पर भी समाज नारी को उसका उचित स्थान कहां दे पाया है। अभी भी कोई यह कहने की स्थिति में नहीं आया कि नारी को उसके अधिकार मिल गए हैं, वह सामाजिक रुढ़ियों से मुक्त हो गयी है या समाज ने उसे नये संदर्भों में पुरुष के समान स्वीकार कर लिया है।"[9]

.प्राचीन समय में स्त्री की स्थिति गरिमापूर्ण थी। भारत जैसे देश में स्त्री को देवी का स्थान मात्र दे दिया जाता है परंतु माना नहीं जाता। उसको समाज में एक वस्तु से ज्यादा कुछ भी माना नहीं जाता है। स्त्री की महत्ता को जितनी देखा जाता है, उतनी ही नीची और गीरि हुई हरकत किया जाता है उसके साथ। उसकी महता को बचाने के लिए समाज को पदक्षेप लेना चाहिए ताकि स्त्री का अस्तित्व बचा रहे। "कभी भारतीय पत्नी देश के लिए गरिमा की वस्तु रही होगी, परंतु आज तो विडम्बना मात्र है। यदि समाज उसकी स्थिति को न समझेगा तो अपनी दशा के प्रति असंतोष उसे वह करने पर बाध्य करेगा जिससे उसकी शेष महिमा भी नष्ट हो जाय।"[10]

आधुनिकीकरण का चद्दर स्त्री पर गहराई से चढ़ा है। वह समय के साथ साथ चलने के लिए आधुनिकता को अपना रही है। परंतु आधुनिकता का ऐसा रुप जहाँ पर एक स्त्री होकर बेटी अपनी माँ की पीड़ा व दर्द को समझ नहीं पाती है। और माँ की बात देर तक अनसुनी कर देर रात तक डिस्को-पब में घूमती है। गीताश्री के 'उजड़े दायरे में' कहानी में देर रात तक माँ जगती रहती और जब बेटी सदिच्छा लड़खड़ाती हुई घर में प्रवेश करती है, तो माँ उसे कहती है कि "इतना क्यों पी लेती है, शोभा देता है क्या, भले घर की लड़कियों को?"[11] इतना ही नहीं बेटी का पलटकर माँ को जवाब देना कि "भले घर, अच्छा, होहोहोहो, ये आप बोल रही हैं मम्मा, आपने कौन सा ध्यान रखा था। मैंने तो सिर्फ दारु पी है।"[12] प्रस्तुत कहानी में आधुनिकता का चित्रण सदिच्छा के पिता के माध्यम से किया गया है। वह अपनी पत्नी साधना का सदिच्छा के प्रतिवाद पर कहते हैं कि "चीखो मत साधना! अपनी उम्र भी देखो, उनकी उम्र देखो... तुलना करती हो। ये आजकल के बच्चे हैं, युवा हैं, मॉडर्न हैं, उन्हें आज़ादी चाहिए, हम कैसे रोक सकते हैं उन्हें?"[13]

मनीषा कुलश्रेष्ठ की 'बिगड़ैल बच्चे' कहानी में आगे आधुनिक युग की विषमता के स्वरूप मनीषा कुलश्रेष्ठ ने वृद्धाश्रम का उल्लेख भी किया है। "भविष्य! ये युवा हमें वृद्धाश्रम के अलावा क्या देंगे? महास्वार्थी है यह पीढ़ी। पहले कभी हमने भारत में वृद्धाश्रमों का नाम तक सुना था? हमारी सास तो आखिर तक हमारी छाती, मेरा मतलब हमारे साथ रहती रहीं।"[14] अर्थात् स्त्री साहित्यकारों वृद्धों पर हो रहे इस अत्याचार की ओर ध्यान देते हुए उनको अपनी कहानी में स्थान देना नहीं भूले हैं। माता-पिता के लिए जैसे बच्चे होते हैं, वैसे ही बच्चों के लिए अपने माता-पिता प्रिय होते हैं। परंतु आज बच्चे

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

अपने माता-पिता के प्रेम तथा स्नेह को भूल कर उनको वृद्धाश्रम में भेज रहे हैं, जो कि अनैतिकता का प्रमाण है।

इक्कीसवीं सदी आधुनिकता का चरम सीमा छुने को है। इस युग में भले ही पुरातन परम्परा एवं शोषित होते समाज का चित्रण देखने को मिलता है परंतु साथ में आधुनिकता के चलते स्त्री तथा पुरुष के संबंधों और नजरिये में नये आयाम नज़र आते हैं, जो कि महिला कथाकारों ने अपनी कहानियों में भी अंकित किया है। गीताश्री की कहानी 'आवाजों के पीछे-पीछे' कहानी में स्त्री और पुरुष अपने जीवन में आपसी व्यस्तताओं के कारण अपने संबंधों को समय न देकर अपने अपने जीवन में अलग-अलग फोन से नये नये पुरुष या स्त्री से बात करते हैं। पुरुष महिला आवाजों का पीछा करते हुए कुछ पल की सुकून हासिल करता, दिन भर का थकान दूर करता तो स्त्री अपनी वाचाल के कारण आर्थिक रुप से सशक्त हो पाती थी। जैसे प्रस्तुत कहानी में चित्रित है कि "अगर आप अपने अकेलेपन से परेशान हैं, दोस्त बनाना चाहती हैं, घर की आर्थिक हालत ठीक नहीं, आपकी आवाज सुरीली है, आप वाचाल हैं, आप घर बैठे, सुरक्षित और आसान कोई काम करना चाहती हैं तो हमें इस नम्बर पर मिस्ड कॉल दें।...आपके नाम को गोपनीय रखने की पूरी गारंटी है। हम आपकी पहचान गुप्त रखेंगे।"[15] जहाँ यह शर्त स्त्री यानि कहानी में निशा को अपनी आवाज को बेचने के लिए थी।

वहीं पुरुषों के लिए लिफाफा कुछ इस तरह का था कि "हैलो दोस्त, मेरा नाम तमन्ना है। मुझे दोस्ती करना पसंद है। क्या आप मेरे दोस्त बनना पसंद करोगे। मुझे दोस्तों के साथ पार्टी करना, समय बिताना, बहुत सारी बातें करना अच्छा लगता है। मेरे घर वालों को मेरी इस आदत से कोई प्रॉबल्म नहीं है। अगर आप एक गर्लफ्रेंड चाहते हैं तो मुझे कॉल करो, किसी भी समय। रात हो या दिन, जब आपका दिल चाहे।..." इस लिफाफे के कारण कहानी में सुनील के जीवन में परिवर्तन हो रहे थे। "सुनील की दोपहरी और शामें भिन्न आवाज़ों से भरी हुई थीं। रंग-बिरंगी आवाजें। आवाजों के भी इतने रंग होते हैं, सोचा न था। वह इन दिनों कानों से देख और महसूस कर सकता था। अपने अकेलेपन को इन्हीं रंगीन आवाजों से भरता था। शुरु-शुरु में टेस्ट करने के खयाल से जिस गली में घुसा था, वह अंतहीन निकली।.."[16]

वर्तमान युग इक्कीसवीं सदी का युग है। स्त्री अपने मन मुताबिक पति का वरण करती है, छोड़ती भी है। साथ ही अपनी खुशी अनुसार दूसरे व्यक्ति से संबंध भी स्थापित करती है। जैसे मेहरून्निसा परवेज़ की 'पत्थरवाली गली' कहानी में स्त्री मर्जी के खिलाफ भले ही पति ने प्रथम अपने दोस्त के साथ बाँटने की बात की हो, परंतु बाद में स्त्री अपने इच्छानुसार पाति के दोस्त के साथ अनैतिक संबंध स्थापित करती है। जैसे लेखिका वर्णन करती हैं कि "अम्मा घर पर चूड़ी बेचने का काम करती थीं। दादा अब मिलिट्री से रिटायर नहीं हुए थे। अब्बा का वह दोस्त गठीले देहवाला पुरुष था। वह घर पर अक्सर आने लगा। जब भी वह आता, अम्मा के लिए अच्छी-अच्छी चीजें लाता और उसके लिए

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-5 No. 2 January–December 2020

ढेर-ढेर खिलौने। धीरे-धीरे अम्मा उससे बहुत हिलमिल गई। कुछ महीने में अम्मा को पता चला कि वह माँ बनने वाली हैं।.."[17]

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि समाज में आधुनिकता के कारण जो दुष्परिणाम सामने आये हैं, उनमें से एक नैतिक पतन भी है। नैतिकता का विकास होने पर ही मनुष्य में मनुष्यता का भाव रहेगा। वह सही गलत का निर्णय स्वयं कर पायेगा। परंतु अगर नैतिकता का पतन हो जाए, तो मनुष्य अपने माता-पिता को भी अपने से अलग कर देता है। लेखिकाओं ने इस ओर अपनी सूक्ष्म दृष्टि डालकर समाज की इस महत्वपूर्ण समस्या को सबके समक्ष उपस्थित किया है। आधुनिक होने का तात्पर्य हमारे पुराने मूल्य एवं संस्कार को भूल जाना नहीं है। अतीत के ऊपर वर्तमान का निर्माण होता है। अतीत को छोड़कर वर्तमान का महत्व नहीं रहता और न ही भविष्य सुगम हो पाता है। अतः अतीत के संस्कृति तथा मानवीय मूल्य को उजागर कर महिला कथाकारों ने मानवीय नैतिकता बजाए रखने की ओर इशारा किए हैं।

संदर्भ सूची

[1]महिलारचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य-डॉ. भारती शेलके, पृ-72, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र-2008
[2]कृष्णा सोबती के उपन्यासों में प्रतिबिंबित नारी जीवन-डॉ. सुलोचना नरसिंगराव अंतरेकी, पृ-151, अमन प्रकाशन, कानपुर
[3]परख-मालती जोशी, पृ-31
[4]नवें दशक की हिंदी कहानी मूल्य विघटन-राहुल भारद्वाज, पृ-104, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, उ.प्र., प्र-1973
[5]उषा प्रियंबदा के कथा साहित्य में नारी-डॉ. भारती वलवी, पृ-165, विद्या प्रकाशन, कानपुर
[6]आधुनिक एवं हिंदी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरुप-डॉ. मुदिता चंद्र, डॉ. सुलक्षणा टोप्पो, पृ-264,भावना प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र-2008
[7]श्रृंखला की कड़ियाँ-महादेवी वर्मा, पृ-109,
[8]नारी स्वातंत्र्य के विभिन्न रुप-रेणुका नैयर,पृ-116
[9]नारी स्वातंत्र्य के विभिन्न रुप-रेणुका नैयर, पृ12
[10]श्रृंखला की कड़ियाँ-महादेवी वर्मा, पृ-77
[11] स्वप्न, साजिश और स्त्री-गीताश्री,पृ-26
[12] स्वप्न, साजिश और स्त्री-गीताश्री,पृ-26
[13] स्वप्न, साजिश और स्त्री-गीताश्री,पृ-28
[14] गंधर्व-गाथा - मनीषा कुलश्रेष्ठ, पृ-106
[15] स्वप्न, साजिश और स्त्री-गीताश्री,पृ-113
[16] स्वप्न, साजिश और स्त्री-गीताश्री,पृ-113
[17] मेरी बस्तर की कहानियाँ - मेहरुन्निसा परवेज़, पृ-192

Copyright © 2020 Authors